पाठ 17

हूंकार की कलंगी

मेवाड़ रा सारा सरदारां रे नाम हुकम लिख्यो गियो।

"सारा सरदार आप री पूरी जमीत अर पूरा ससतराँ सूधी उदैपुर हुकम पोंचतां ही हाजर व्हे जावै। देर नीं करै।" हुकम रे ऊपरै राणाजी आप दसगतां सूँ दो ओळाँ लिखी, "जो हाजर नीं व्हेला वीं री जागीर एकदम जब्त करली जावैला। काँई तरै री रियायत कोनी होसी। देस री विपद री वेळा में हाजर नीं व्हेणों हरामखोरी मानी जासी।"

सवारां ने हुकम रा कागद दे दोड़ाय दीधा।

कोसीथळ रा कामदार रा हाथ में सवार जाय हुकम पकड़ायो, रसीद पाई कराई। बाँच्यो, बाँचतां ही कामदार रो मूंडो उतरग्यो। कोसीथळ चूंडावताँ री छोटी–सी जागीर ही। वठा रा ठाकर दो तीन बरस पै'ला एक झगड़ा में काम आयग्या। दो बरस रा टाबर ने छोड़ग्या। ठिकाणा में नैनपण! राणाजी रो यो करड़ो हुकम!! भगवान चोखी वणाई!!!

टाबर ठाकर, री माँ ई बाळक माथै आसा रा दीवा जोवती आपरी जूण काट री।

कामदार जनानी डोढ़ी पै जाय अरज कराई, "माँजी साब ने अरज करो, जरूरी बात अरज करणी है।"

डावड़ी जाय कह्यो, "ठिकाणै रा कामदार फोजदार ढ़ोढ़ी पै ऊभा है। आप सूँ मूंडामूंड बात करबा ने हाजर व्हेवा री कै है।"

माँजी री छाती धड़ धड़ करवा लागी, "फेर कोई नवो दुख तो नीं आयग्यो।"

डावड़ी ने कह्यो, "बारणा पै पड़दो बाँध दे, वाँने माँयने बुलाय ला।"

बेटा री आँगळीं पकड़, पड़दा रे सारै माँयने ऊभी व्हेयगी। कामदार फोजदार मुजरो कर पड़दा सूँ बारै ऊभा व्हेग्या। हाथ लांबो कर राणाजी रा हुकम रो कागद पड़दा में माँजी ने झलायो।

"अबै?" बाँचतां ही माँजी रा मूंडा सूँ कोरा दो अक्खर हीज निकळया। "अबै आप हुकम दो जो ही करां। ठाकरसा तो पूरा पाँच बरस रा ही कोयनी व्हीया, चाकरी में लेर जावां तो किस तरै ले जावां।" माँजी री नजर आँगळी पकड़नै ऊभा बेटा री काळी काळी भोळी भोळी आँख्यां सूँ जाय टकराई। माँ री ममता जाग गी। रुं रुं ऊभो व्हेग्यो, छाती में दूध उतरवा रो सो सरणाटो आयग्यो। लारै रो लारै "जो हाजर नीं व्हेला वींरी जागीर जब्त करली जासी।" हुकम री ओळां बळबळता खीरा री नांई आंख्यां आगै चमकगी।

मन में एक साथै कतरा ही विचार आयग्या। "जागीर जब्त हो जासी? म्हारो बेटो बाप दादां रा राज बाहिरो व्हे जावैलो। वीं री पाँच भायां में काँई इज्जत रैवेला? वीं रै बाप नीं रिया पण म्हूं तो हूँ। म्हारे जीवतां जीव बेटा रो हक छूटै, धिरकार है म्हारे मिनख जमारा पै। म्हूं असी खोड़ली हूँ काँई जो पीढ़्याँ री भौम ने

गमाय दूँ। म्हारा वंस पै दाग नीं लागै?''

वींरी आँख्यां रे आगै एक तसबीर सी आयगी जाणै वीरो जवान बेटो ऊभो है, सगा परसंगी रोळ में मोसो मार रिया है, ''ये लड़ाई में नीं पधार्‌या सा जो कोसीथळ ने राणाजी खोस लीधी। हें हें हें! यां चूंडावतां ने आपरी वीरता रो घणों घमंड है।'' दूजे ही पल दाँतां री कट कट्‌यां भींचता बेटा रो नीचो माथो, नीची नजर व्हेती लगी दीखी।

माँजी रा माथा में चक्कर आयग्यो। जवान व्हीयां बेटो ई माँ ने जतरो धिक्कारे थोड़ो। वाँने याद आयगी आपरे बाप रा मूंडां सूँ सुणी जूनी का'ण्यां, लुगायां कसी कसी वीरता सूं झगड़ा कीधा। आँरे ईज खानदान में पत्ताजी चूण्डावत री ठुकराणी अकबर री फोज सूँ लड़ी, गोळियाँ री रीठ बजाय दीधी। पछै म्हूं नीं जावूं?

ई विचार सूँ वांरा हालता मन में थिरता आयगी। नेत्र चमकग्या। जीव सोरो व्हेग्यो। घणां ठिमरास सूँ पड़दा री आड में सूँ बोली, ''धणियाँ रो हुकम माथा पै। करो, जमीत री त्यारी करो। घोड़ां आदमियां ने त्यार होण रो हुकम दो।''

''वो तो ठीक है। पणी धणी बिना फोज कसी।''

''क्यूँ? म्हूं हूँ के धणी। म्हूं जावूँला।''

''आप।'' अचम्भा सूँ कामदार अर फोजदार दोवां रा मूंडा सूँ एक साथ ही निकळग्यो।

''हाँ म्हूं। अचम्भा री काँई बात है। थारै ईज घराणा में कतरी ठुकराणियाँ लड़ाई में झूंझी है के नीं? थाँ कस्या जांणो कोयनी? म्हूं कोई अणूती बात कर री हूँ के? पत्ताजी री माँ अर वांरी ठुकराणी अकबर सूँ लड़ता लड़ता मर्‌या कै नीं? म्हूं ही वांरा हीज घराणां में आई हूँ। म्हूं क्यूँ नीं जावूँ?''

जमीत सजगी। नगारा पै कूंच रो डंको पड्‌यो। निसाण री फर्रियाँ खोल दीधी। पाखर घल्यो घोड़ो आय ऊभो व्हीयो। माथे टोप, जिरह बख्तर रा काळा लोह सूँ ढक्या हाथ बेटा री कंवळी कंवळी बाँहां ने पकड़ गोद में उठावा ने आगै व्हीया। टाबर सहमग्यो। बोली तो माँ सरीखी अर यो अजब भेख रो आदमी कुण। गालां रे होठ अड़ातां अड़ातां मां री पलकाँ आली व्हेगी, ''बेटा, यो सब थारे वास्तै, थारी इज्जत वास्ते।''

एक ठंडी साँस रे साथे वांरा होठ हाल्या।

आगै आगै घोड़ा पै भालो

भळकावतो फोज रो मांझी अर लारै लारै सारी जमीत उदैपुर आय हाजरी में नामो मंडायो, ''कोसीथळ रा फलाणा सिंघ चूंडावत मय जमीत रै हाजर।''

हमलो व्हीयो। हड़ोल चूंडावताँ री। हमलो करै तो पै'लां हड़ोल वाळा ही आगै बढे अर सत्रुवाँ रो हमलो झेलै तो ही हड़ोल पै ही जोर आवै। सिंधू राग गावण लाग्या। हड़ोल रै अधबीचै, चूंडावताँ रा पाटवी सळूबर रावजी ऊभा व्हे बोल्या, ''मरदाँ! दुसमणाँ पै घोड़ा ऊर दो। मर जाणो पण पग पाछो नीं देणो। या हड़ोल में रैवा री इज्जत, आपाँ पींढ्याँ सूँ निभाय रिया हां, आज ई आपणी जिम्मेदारी ने पूरी निभावजो, देस सारुं मरणो अमर व्हेणो है। हाँ, खैंचो लगामाँ।''

एक हाथ सू लगाम खैंची दूजा हाथ में तरवाराँ तुलगी।

हड़ोल वाळाँ रा घोड़ा उड़्या जांरे भेळै माँजी घोड़ा ने उड़ायो। खचाखच सरु व्ही। तरवाराँ रा बटका व्हेण लाग्या अर माथाँ रा झटका।

माँजी री तरवार ही पळाका लेय री, एक जणा पै तरवार रो वार कीधो, वीं फुरती सूँ वार ने ढाल पै झेल पाछो भालो मार्‌यो जो पाँसळी ने पोवतो लगो बारै निकळग्यो। माँजी री रान छूटगी साथै रै साथै घोड़ा सूँ नीचै ढळकग्या।

साँझ पड़ी। झगड़ो बन्द हुयो। खेत संभाळवा लाग्या। घायलाँ ने उठाय उठाय पाटा पीड़ करवा लाग्या। लोह री टोप सूँ बारै केस लटक रिया। पाटो बाँधवा ने हाथ लगायो तो देखै लुगाई। वठै रा वठै ठबक्या रेयग्या।

''या कुण अर क्यूँ।''

राणाजी ने अरज व्ही,

''घायलाँ में एक लुगाई पूरा वीर भेस में मिली। नाम पतो पूछाँ तो बतावै नीं।''

राणाजी गिया। लोहा रो टोप नीचै गज गज लांबा केस लटक रिया, लोयाँ सूँ भर्‌या चिपक रिया।

''साँच साँच बतावो नाम ठिकाणो। छिपावो मत दुसमण व्होला तो ही म्हूँ थाँरो आदर करूँ। म्हारे बेन ज्यूँ हो।''

''कोसीथळ ठाकर री माँ हूँ अन्दाता'' माँजी बोल्या।

''हैं! राणाजी अचम्भा सूँ कूद्‌या। थाँ लड़ाई में क्यूँ आया?''

''अन्दाता रो हुकम हो। जो लड़ाई में हाजर नीं व्है जींरी जागीर जब्त व्हे जावेला। म्हारे टाबर छोटो है। हाजर नीं व्हेणो मालकाँ री अर मेवाड़ री हरामखोरी व्हेती।''

करुणा अर गुमान रा आँसू राणाजी रे आँख्या में छलक गिया। ''धन्न है थाँ!'' राणाजी गदगद व्हेग्या। ''यो मेवाड़ बरसाँ सूँ आन राख रियो जो थाँ जसी देवियाँ रो

परताप है। थाँ देवियाँ म्हारो अर मेवाड़ रो माथो ऊँचो कर राख्यो है। जठा तक असी माँवां है जतरै आपाँ रो देस पराधीन कोनी व्है।''

ई वीरता री एवज में, थाँने इज्जत देणों चावूँ, बोलो थाँ ही बतावो, जो थाँरी इच्छा व्है।''

माँजी सोच में पड़ग्या, काँई माँगै, कोई इच्छा व्है तो माँगै।

वाँरी आँख्या आगै बेटा री वे काळी काळी भोळी भोळी आँख्याँ फिरगी। माँ री ममता झटको खाय जागगी।

''अन्दाता राजी हो अर मरजी हीज है तो कोई असी चीज बगसावो जांसूँ म्हारो बेटो पाँचाँ में ऊँचो माथो करने बैठे।''

''हूंकार की कलंगी थाँने बगसी जो थाँरो बेटो ही नीं पींढ्याँ लग या कलंगी पै'र ऊँचो माथे कर थाँरी वीरता ने याद रखावैला।''

शब्दार्थ

हुकम	–	आदेश	हाजर	–	उपस्थित
दसगताँ	–	हस्ताक्षर	ओळाँ	–	पंक्तियाँ
रियायत	–	छूट	नैनपण	–	बचपन
ढ़ोढ़ी	–	ड्योढ़ी, द्वार	ऊभा	–	खड़ा
सरणाटो	–	सन्नाटा	बळबळता	–	धधकते
ठिमरास	–	धीरज	कूच	–	रवानगी
निसाण	–	ध्वजा	कँवळी	–	कोमल
मांझी	–	मल्लाह	पळाका	–	चमकना
रान	–	लगाम	आन	–	इज्जत
पराधीन	–	गुलाम	भेस	–	वेश / पहनावा
गुमान	–	गर्व	विपद	–	संकट
मूंडो	–	चेहरा	दीवा	–	दीपक
जूण	–	जिंदगी	अरज	–	निवेदन / आग्रह
खोस लीधी	–	छीन ली	हूंकार	–	ललकारने का भाव
परसंगी	–	रिश्तेदार	पै'र	–	पहन कर
कामदार	–	रियासत कालीन मुख्य कार्यकारी अधिकारी			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. कोसीथळ के कामदार के पास कहाँ से संदेश आया?
2. कोसीथळ किस कुल की जागीर थी?
3. कोसीथळ की सेना किसके नेतृत्व में लड़ाई में शामिल हुई?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. मेवाड़ महाराणा की ओर से संदेश आया था–
   (क) समस्त जागीरदार लगान जमा करें।
   (ख) उदयपुर में आयोजित उत्सव में शामिल हों।
   (ग) मेवाड़ दरबार में अपनी उपस्थिति दें।
   (घ) सैन्य बल सहित युद्ध में हाजिर हों। ( )
2. कोसीथळ जागीर में महाराणा के संदेश से चिंता पैदा हो गई क्योंकि–
   (क) कोसीथळ जागीर के ठाकुर अस्वस्थ थे।
   (ख) कोसीथळ जागीर के पास सैन्य शक्ति का अभाव था।
   (ग) कोसीथळ के ठाकुर की उम्र अभी पाँच वर्ष से भी कम थी।
   (घ) कोसीथळ के ठाकुर युद्ध में शामिल होना नहीं चाहते थे। ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सळूबरराव जी ने हमले से पहले हडोल वालों को क्या समझाया?
2. संदेश पढ़कर कोसीथळ ठाकुर की माँ ने क्या कहा?
3. युद्ध में घायल महिला को देखकर राणाजी ने क्या पूछा?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. राणाजी की आँखों में करुणा एवं गर्व के आँसू क्यों छलक पड़े?
2. राणाजी ने उस वीरांगना की सराहना कैसे की?
3. कोसीथळ की वीर माता को राणाजी ने क्या सम्मान दिया?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मेवाड़ से आये संदेश को पढ़कर कोसीथळ कामदार का चेहरा क्यों उतर गया?
2. राणाजी के संदेश से माँजी चिंतित क्यों हो गईं?
3. युद्ध में शामिल होने के लिए कोसीथळ में क्या–क्या तैयारियाँ की गईं?

भाषा की बात

1. अग्रलिखित राजस्थानी शब्दों का सामने दिए हिंदी शब्दों से मिलान कीजिए–

ससतर	दुश्मन
पड़दा	शस्त्र
धिरकार	प्रताप
दुसमण	धिक्कार
परताप	पर्दा

2. निम्नलिखित राजस्थानी मुहावरों का अर्थ स्पष्ट कीजिए–

(क) मूंडो उतरणो (ख) आसा रा दीवा

(ग) छाती धड़–धड़ करणो (घ) छाती में दूध उतरणो

(ङ) माथो नीचो व्हैणो (च) पग पाछा नीं देवणा

(छ) माथो ऊंचो व्हैणो

3. इस पाठ में 'रुं रुं ऊभा हुग्या' तथा 'लड़ता लड़ता मरग्या' जैसे वाक्यांश आए है, जिनमें किसी न किसी शब्द की आवृत्ति हुई है। पाठ पढ़कर ऐसे अन्य शब्द छाँटिए व उनके अर्थ लिखिए।

पाठ से आगे

1. अगर कोसीथळ की ओर से लड़ाई में कोई नहीं जाता तो क्या होता? कल्पना के आधार पर लिखिए।

यह भी करें–

1. इस पाठ की लेखिका लक्ष्मीकुमारी चूंडावत ने लोक कथाओं को आधार बनाकर अनेक कहानियों की रचना की है। विद्यालय के पुस्तकालय से उनकी अन्य कहानियाँ तलाश कर पढ़िए।
2. हाड़ी रानी, पन्नाधाय जैसी महिलाओं ने अपने जीवन से वीरता की मिसाल पेश की है। अपने शिक्षक/शिक्षिका की मदद से ऐसे उदाहरणों का संकलन कर डायरी में लिखिए।

यह भी जानें–

पुस्तकालय से झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता की कहानी प्राप्त कर पढ़िए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"दृढ़ता बड़ी प्रबल शक्ति है। मनुष्यों के सर्व गुणों की रानी है।
दृढ़ता वीरता का एक प्रधान अंग है।"

स्वच्छता की प्रतिज्ञा

एक कदम स्वच्छता की ओर

मैं शपथ लेता/लेती हूँ कि मैं स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग रहूँगा/रहूँगी और उसके लिए समय दूँगा/दूँगी।

हर वर्ष 100 घंटे यानि हर सप्ताह 2 घंटे श्रमदान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करूँगा/करूँगी। मैं न गंदगी करूँगा/करूँगी और न किसी को करने दूँगा/दूँगी। सबसे पहले मैं, स्वयं से, मेरे परिवार से मेरे मोहल्ले से, मेरे गाँव से एवं मेरे कार्यस्थल से शुरूआत करूँगा/करूँगी।

मैं यह मानता हूँ कि दुनिया के जो देश साफ दिखते हैं उसका कारण है कि वहाँ के नागरिक गंदगी नहीं करते हैं और न ही होने देते हैं। इस विचार के साथ मैं गाँव–गाँव एवं गली–गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूँगा/करूँगी।

मैं आज जो शपथ ले रहा/रही हूँ वो अन्य व्यक्तियों से भी करूँगा/करूँगी कि वे भी मेरी तरह स्वच्छता के लिए सौ घंटे दें इसके लिए प्रयास करूँगा/करूँगी।

मुझे मालूम है कि स्वच्छता की ओर बढ़ाया गया मेरा एक कदम पूरे भारत को स्वच्छ करने में मदद करेगा।

।। जयहिंद ।।

केवल पढ़ने के लिए

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

क्या तुमने कभी सुना है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?
कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियो ंमें
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हज़ारों–हज़ार हाथ?
क्या होती है, तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?
सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढ़ाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?
इस घाट अपने कपड़े और मवेशियाँ धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?
कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठा पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर?
सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथोड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख?
खून की उल्टियाँ करते
छेदे है कभी हवा को, अपने घर के पिछवाड़े?
थोडा–सा वक्त चुराकर बतिया या है कभी
कभी शिकायत न करनेवाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?
अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर सन्देह है!!

निर्मला पुतुल